दृष्टि The Vision

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल- II)

मानव भूगोल में संदर्श और मॉडल, सिद्धांत एवं नियम

(भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान और समुद्र विज्ञान)

DTVF/18(JS)–OPS–**G2**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): सुनील कुमार धनवन्ता

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 02 एवं 02 June, 2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]: ____________

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

नोटः प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

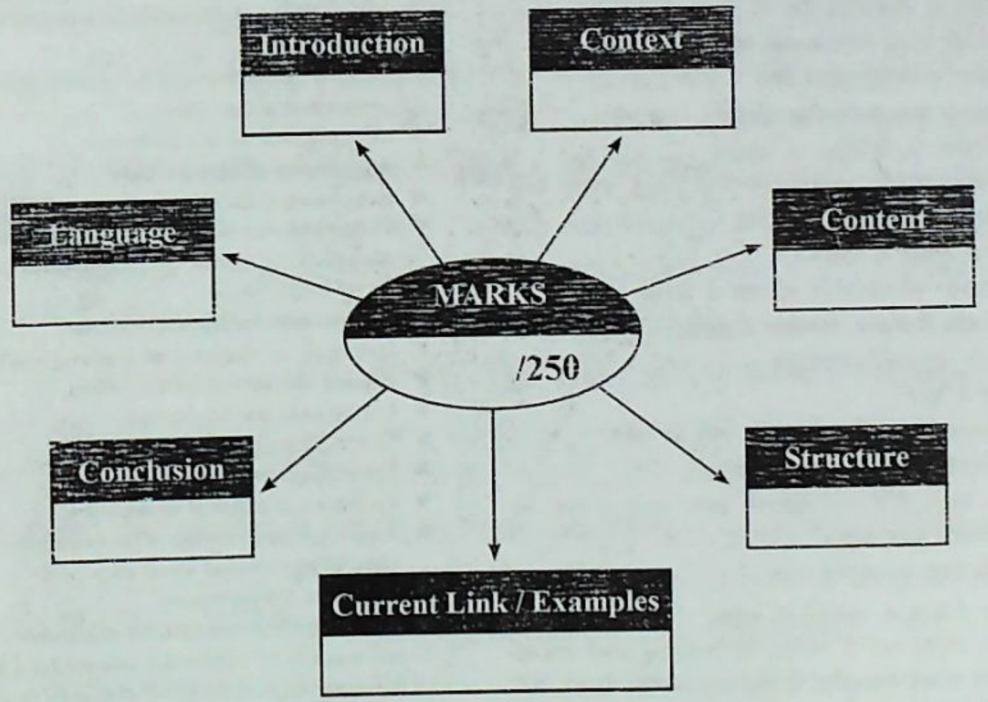

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

1. निम्नलिखित प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) 'किसी एक क्षेत्र की विशिष्टता उसे दूसरे क्षेत्र से भिन्न व्यक्तित्व प्रदान करता है।' टिप्पणी कीजिये।

'The trait of a place gives it a character which is different from other areas.' Comment.

उपरोक्त कथन क्षेत्रीय विभेदन से संबन्धित है जिसमें क्षेत्रों के मध्य उनके गुणों के कारण विविधता पायी जाती है।

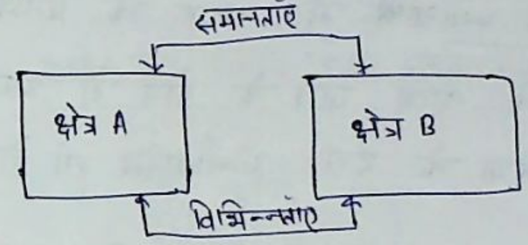

उपर्युक्त चित्रों में प्रदर्शित क्षेत्र A तथा क्षेत्र B में अनेक समानताएं व विभिन्नताए हो सकती है। जैसे इनकी भौतिक अवस्थाएं, जलवायु अलग हो सकती है तथा इसमें कुछ गुण जैसे जनसंख्या, भाषा इत्यादि समान हो सकती है।

इसी प्रकार हिमालय की अनेक विशेषताएं ऐसी है जो उसको उत्तर के विशाल मैदान से अलग करती है जिसमें उच्चावच, ढाल, जलवायु, वनस्पति, जनसंख्या वितरण इत्यादि प्रमुख है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वप्रथम रिकेरियस ने क्षेत्रीय विभेदन संबन्धी अपने विचार व्यक्त किया। बाद में हेटनर (1898) महोदय ने बताया कि भूगोल प्राचीन काल से ही पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य विभिन्नताओं का अध्ययन होता रहा है।

बाद में हार्टशॉर्न ने अपनी पुस्तक 'नेचर एण्ड परसपेक्टिव ऑफ ज्योग्राफी' में बताया कि प्रत्येक क्षेत्र अपने गुणों के कारण पास के क्षेत्र से अलग होता है तथा अंतर्क्रिया के द्वारा अंतर्संबन्धित भी होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है किसी भी एक क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक, आर्थिक गुण उसको दूसरे क्षेत्र की अपेक्षा विशिष्टता प्रदान करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) भूगोल में द्वैतवाद का क्या महत्त्व है? स्पष्ट कीजिये।
What is the importance of dualism in geography? Elucidate.

एक ही विषयवस्तु के अध्ययन प्रारूप व अध्ययन विधि को लेकर अलग-अलग विचारों का पाया जाना ही द्वैतवाद कहलाता है। भूगोल में अनेक द्वैतवाद पाये जाते हैं जो प्राचीन काल से ही प्रचलित हैं जिसमें मानव भूगोल बनाम् भौतिक भूगोल, क्रमबद्ध भूगोल बनाम् प्रादेशिक भूगोल प्रमुख है।

भूगोल में द्वैतवाद के सकारात्मक पहलू

(क) हम जानते है कि प्रत्येक विषय को पढ़ने की अलग-अलग विधि होती है जैसे भौतिक भूगोल में वैज्ञानिक सिद्धान्तों, जिसमें भौतिकी विज्ञान के सिद्धान्त मुख्य है, के माध्यम से अध्ययन किया जाता है जबकि मानव भूगोल में मानव के व्यवहार, सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन होता है जहाँ भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों की अपेक्षा सामाजिक विज्ञान के सिद्धान्तों व आनुभाविक विधियों का प्रयोग होता है। इस प्रकार इनके अलग-अलग अध्ययन से विषय की समझ अच्छी होती है तथा विश्लेषण की गुणवत्ता में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्पष्टता आती है।

(ख) विषय को बांटकर अध्ययन करने से विश्लेषण आसान व तीव्र हो जाता है।

(ग) इसमें गहनता से एक ही विषय का अध्ययन संभव होता है जैसे क्रमबद्ध भूगोल का प्रदेशीक भूगोल से अलग अध्ययन करने पर आसानी रहती है व स्पष्टता ज्यादा आती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्वैतवाद विषय की स्पष्ट समझ के लिए अवश्यक है परन्तु अनेक विद्वानों का मानना है कि भूगोल एक अन्तर्संबन्धित विषय है तथा द्वैतवाद से भूगोल विषय की एकता नष्ट होती है। हार्टशॉर्न महोदय ने द्वैतवाद की आलोचना की है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(d) 'पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रदेश' पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on 'Western cultural region.'

पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रदेश एक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदेश है जिसका विस्तार अनेक महाद्वीपों में पाया जाता है क्योंकि यूरोपीयों ने औपनिवेशिक काल के दौरान अपनी संस्कृति व रहन-सहन को इन भागों में पहुंचाया था।

इसमें निम्न प्रदेश शामिल है

(i) पश्चिमी यूरोपीय प्रदेश - यह विकसित देशों का समूह है जहाँ आधुनिक विचारों में धर्म का कम महत्व है तथा शिक्षा का काफी उन्नत प्रसार है। यहाँ खान-पान, वेशभूषा काफी आधुनिक ढंग की है। यहां अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन इत्यादि भाषाएं बोली जाती है।

(ii) पूर्वी महाद्वीपीय यूरोपीय प्रदेश।

(iii) रूसी प्रदेश।

(iv) आंग्ल-अमेरिकी प्रदेश

(v) दक्षिणी-अमेरिकी । लैटिन अमेरिकी प्रदेश

(vi) आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड के क्षेत्र।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य का उच्च स्तर पाया जाता है हालांकि पूर्वी यूरोप व दक्षिणी अमेरिका में कम पाया जाता है।

इनमें धर्म का महत्व समाज पर कम है क्योंकि ये आधुनिक विचारों से ओतप्रोत है।

यहाँ उपभोक्तावाद की संस्कृति का प्रचलन है तथा आधुनिक ढ़ंग के रहन-सहन, खानपान का प्रदर्शन होता है।

इस प्रदेश में अंग्रेजी प्रमुख भाषा है परन्तु उसके साथ-साथ फ्रेंच, जर्मन, पुर्तगाली, स्पेनी भाषा भी प्रमुख रूप से बोली जाती है।

इस प्रकार यह प्रदेश विस्तृत क्षेत्र में विस्तार के साथ एक अत्यन्त विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदेश है जहाँ अनेक भाषाओं, नस्लों व रहन-सहन के लोग पाये जाते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) 'वातावरण समायोजन सिद्धांत' पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।
Briefly comment on 'Principle of Environmental Adjustment'.

वातावरण मनुष्य पर काफी गहरा प्रभाव डालता है। पर्यावरण अपने तत्वों जैसे जलवायु, तापमान, वर्षा इत्यादि के द्वारा मानव की क्रियाविधि को नियंत्रित करता है परन्तु मानव भी अपने ज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास के आधार पर उस वातावरण को परिवर्तित कर समायोजित करने का प्रयास करता है।

अंतरिक्ष में मानव के प्रवेश के लिए अंतरिक्ष यानों का निर्माण, भौगोलिक स्थलों के बीच महासागरों के अवरोध को दूर करने हेतु जलमार्गों व जलपरिवहन का विकास, जलवायु की कठोरता से बचने के लिए अनुकूल आवासों का निर्माण इत्यादि में मानव द्वारा वातावरण समायोजन की झलक मिलती है।

पर्यावरणवाद में माना गया था कि पर्यावरण ही शक्तिशाली है मानव को तो केवल उसके निर्देशों का पालन करना होता है परन्तु मानव ने तकनीक व प्रौद्योगिकी का विकास कर इस अवधारणा को काफी हद तक गलत ठहरा दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वातावरण- समायोजन सिद्धान्त में मानव द्वारा पर्यावरण में परिवर्तन और अपने अनुसार अनुकूलित करने का विचार शामिल किया जाता है।

आज मानव ने ज्ञान- विज्ञान के माध्यम से वातावरण को काफी अपने अनुकूल बना लिया है। गर्मी से बचने के लिए 'एसी' का विकास तो सर्दी से बचने के लिए 'हीटर' विकास। परन्तु इसके पर्यावरण पर अनेक नकारात्मक प्रभाव भी पड़े हैं जिसमें प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन प्रमुख है।

अतः हमें ग्रिफिथ टेलर के नवनिश्चयवाद या 'रुको और जाओ निश्चयवाद' के अनुसार पर्यावरण समायोजन पर बल देना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (a) रेटजेल की नियतिवादी सोच में डार्विन के सिद्धांत (जीवों के उद्‌विकास) की एक झलक मिलती है। स्पष्टीकरण कीजिये। 15

Ratzel's deterministic ideas are a reflection of Darwin's theory (Evolution of organisms). Elucidate. 15

भौगोलिक पर्यावरण मानवीय संस्कृति, इतिहास, खान-पान, वेशभूषा इत्यादि को नियंत्रित करता है इसी विचारधारा को नियतिवाद या पर्यावरणवाद की संज्ञा दी जाती है।

प्राचीन कालीन यूनानी ~~[illegible]~~ एवं रोमन विद्वानों ने इस विचारधारा के विकास में योगदान दिया। डार्विन महोदय ने अपनी पुस्तक 'ऑरिजीन ऑफ स्पीशीज' में विचार व्यक्त किया कि मानव के विकास पर पर्यावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

इन्होंने आगे बताया कि जो प्रजाति अपने आप को पर्यावरण के अनुसार समायोजित कर लेती है उसका अस्तित्व रहता है बाकी सब नष्ट हो जाते हैं। इसको इन्होंने "योग्यतम की उत्तरजीविता" की संज्ञा दी।

जर्मन भूगोलवेत्ता रेटजेल ने पर्यावरणवाद का समर्थन किया तथा अपनी पुस्तक 'एन्थ्रोपोज्योग्राफी' में मत व्यक्त किया कि मानव पर्यावरण के द्वारा काफी हद तक प्रभावित होता है। इन्होंने डार्विन के सिद्धान्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को स्वीकार करते हुए मानव विकास पर पर्यावरण के प्रभाव को समझने का प्रयास किया। इन्होंने सभ्यता व संस्कृति को एक जैविक संरचना मानकर उस पर पर्यावरण के प्रभाव को विश्लेषित किया।

रैट्जेल ने कहा कि पर्यावरण न सिर्फ मानव की उत्पत्ति, रहन-सहन को प्रभावित करता है बल्कि उसके चरित्र को भी काफी हद तक प्रभावित करता है।

रैट्जेल ने इसको आगे बढ़ाते हुए कहा कि विभिन्न प्रजातियाँ पर्यावरण की परिस्थितियों के अनुसार ही विकसित होती हैं अर्थात् जो प्रजाति पर्यावरण के आदेशों का पालन नहीं करती वे नष्ट हो जाती हैं।

रैट्जेल की विचारधारा को आगे 'मिस सेम्पल' के द्वारा आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया जो उसकी अमेरिकी शिष्या थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार डार्विन के जैव विकास के सिद्धान्त से प्रभावित होकर रेटजेल ने मानव पर पर्यावरण के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए नियतिवादी विचारधारा को आगे बढ़ाया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) भौगोलिक विचारधारा को प्रारंभिक मध्यकालीन अरब भूगोलवेत्ताओं ने किस प्रकार आगे बढ़ाया? विवेचना कीजिये। 15

How did the early medieval Arab geographers help advance the geographical concepts? Discuss. 15

भौगोलिक विचारधाराओं के विकास में विश्व के अनेक भूगोलवत्ताओं के साथ-साथ अरब विद्वानों का योगदान भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है जिन्होंने मध्यकाल में अपनी वैश्विक यात्राओं के द्वारा भूगोल संबन्धी अनेक विचारों का प्रतिपादन किया।

अरब भूगोलवत्ताओं में अल मसूदी, इब्न हाकल, अल इदरिसी, इब्न बतूता, अल बरूनी इत्यादि का नाम प्रमुख है जिन्होंने भूगोल के विचारधारात्मक विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

अल मसूदी ने नियतिवाद का समर्थन करते हुए कहा कि एशिया के निवासियों को अनुकूल जलवायु की प्राप्ति होती है जिससे वे विनोदी व प्रसन्नचित्र स्वभाव के होते हैं वहीं दूसरी ओर अरब प्रदेशों में विषम जलवायु के कारण यहाँ के लोग चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इब्न बतूता ने मोरक्को से चलकर विश्व के अनेक भागों की यात्रा की तथा अपनी पुस्तक रेहला में पृथ्वी के भौगोलिक वातावरण के संबन्ध में अपने विचार व्यक्त किए।

अल-बरूनी ने पुस्तक 'किताब-उल-हिन्द' में भारत के भौगोलिक व सामाजिक वातावरण का उल्लेख किया।

अधिकांश अरब भूगोलवेत्ताओं को नियतिवाद या पर्यावरणवाद का समर्थक माना जाता है क्योंकि इन्होंने अपने काल में विश्व की स्थलीय व समुद्री यात्राओं के द्वारा भौगोलिक वातावरण का प्रेक्षण करके तथा उसके मानव पर प्रभाव का गहन विश्लेषण करके अपने विचारों को व्यक्त किया।

इनका मानना था कि पर्यावरणीय शक्ति ही सर्वशक्तिशाली है तथा मानव के व्यवहार, खान-पान, धार्मिक प्रवृत्ति, मानसिक विकास, वेशभूषा, सामाजिक व्यवस्था इत्यादि पर पर्यावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार पर्यावरणीय निश्चयवाद के विकास में अरब विद्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की जाती है क्योंकि वे उस समय की भौगोलिक परिस्थितियों के अध्ययन में रुचि रखते थे तथा अपने धर्म का प्रचार करना चाहते थे। कुछ विद्वानों ने इसी के साथ क्रमबद्ध भूगोल व प्रादेशिक भूगोल के विकास में भी अपनी भूमिका निभाई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(c) भूगोल में भौतिक और मानवीय भूगोल की द्वैतता कहाँ तक प्रासंगिक है? सुस्पष्ट कीजिये। 20

How relevant is the dualism of physical and human geography? Elucidate. 20

किसी एक विषयवस्तु की अध्ययन की क्रियाविधि तथा विषयवस्तु के प्रारूप को लेकर अलग-अलग विचारों का विकसित होना द्वैतवाद कहलाता है।

भूगोल में प्रारंभिक काल से ही द्वैतवाद का प्रचलन रहा है जिसके समस्त कालों के विद्वानों ने अपना योगदान दिया है।

भूगोल में प्रचलित प्रमुख द्वैतवाद -

(क) क्रमबद्ध भूगोल बनाम प्रादेशिक भूगोल

(ख) मानव भूगोल बनाम भौतिक भूगोल

(ग) पर्यावरणवाद बनाम संभववाद

(घ) वर्तमान भूगोल बनाम ऐतिहासिक भूगोल

भूगोल में मानव भूगोल बनाम भौतिक भूगोल का प्रचलन प्राचीन काल से है जिसमें ग्रीक विद्वानों व रोमनविद्वानों जैसे हिप्पोक्रेट्स, हिकेटियस, स्ट्रेबो इत्यादि का योगदान है।

1650 ई. में बर्नार्ड वेरेनियस ने 'Geographic generalis' नामक पुस्तक में इस द्वैतवाद का विचार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत किया है।

बाद के काल में हम्बोल्ट, रीटर जैसे विद्वानों ने इसे आगे बढ़ाया। हम्बोल्ट ने अपने ग्रन्थ 'कॉसमॉस' में भौतिक भूगोल पर बल दिया तथा इसे ही सामान्य भूगोल की संज्ञा दी तो वही रीटर ने मानव भूगोल पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

बाद के काल में डेविस, पेंक, वुड, रेटजेल इत्यादि विद्वानों ने भौतिक भूगोल के अध्ययन पर ज्यादा बल दिया वही मिस सेम्पुल, फैब्रे, ब्लाश इत्यादि ने मानव के क्रियाकलापों को महत्व प्रदान करते हुए मानव भूगोल को प्राथमिकता दी

आज वर्तमान में भूगोल का अध्ययन भौतिक भूगोल एव मानव भूगोल के रूप में किया जाता है परन्तु कुछ विद्वानों ने मत व्यक्त किया है कि भूगोल में ऐसे द्वैतवाद की कोई आवश्यकता नहीं है।

भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल दोनों ही भूगोल के महत्वपूर्ण अंग है तथा आपस में एक-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरे से काफी अच्छी तरह से अंर्तसंबन्धित है। भौतिक पर्यावरण का मानव पर प्रभाव पड़ता है तो वहीं मानव भी अपने कार्यों के द्वारा पर्यावरण को प्रभावित करता है। इन दोनों को अलग करना एक कठिन कार्य है।

हार्टशॉर्न महोदय ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के द्वैतवाद से मानव भूगोल की एकता भंग होती है अतः मानव भूगोल व भौतिक भूगोल का एक दूसरे के साथ अंतर्संबन्धित रूप से अध्ययन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हालांकि भौतिक एवं मानव भूगोल दोनों में अध्ययन के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं परन्तु दोनों को एक-दूसरे से अलग करके नहीं रखा जा सकता है। इसलिए 'मानव भूगोल एवं भौतिक भूगोल' एक ही निरन्तरता (continuam) के दो सिरे हैं' कथन सत्य प्रतीत होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) भूगोल में मात्रात्मक क्रांति के क्या लाभ हैं? वर्तमान में इसके महत्त्व को उजागर करते हुए समालोचनात्मक विवचेना कीजिये। 20

What are the advantages of quantitative revolution in geography? While highlighting its importance at Presents critically examine. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूगोल में गणितीय विश्लेषणों, प्रमेयों, मॉडलों इत्यादि का प्रयोग ही मात्रात्मक क्रान्ति कहलाता है।

आई. बर्टन ने 'कनाडियन ज्योग्राफर 7' में अपना 'मात्रात्मक क्रान्ति एवं सैद्धान्तिक भूगोल' नामक शोधपत्र प्रकाशित किया तथा मात्रात्मक विधियों का विवेचन किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले भूगोल वर्णनात्मक विषय था जिससे विद्वानों ने इसकी प्रासंगिकता व उपयोगिता पर प्रश्नचिह्न उठाए। जेम्स कोनांट ने तो 1948 ई. में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग को बन्द करने का निर्णय ले लिया।

इसी को देखते हुए भूगोलवेत्ताओं भूगोल की प्रतिष्ठा को वापस स्थापित करने के लिए भूगोल में गणितीय विधियों, मॉडलों का प्रयोग प्रारंभ किया तथा इसका विकास कई चरणों में हुआ।

इस प्रकार मात्रात्मक क्रान्ति से निम्न लाभ प्राप्त हुए -

(i) इसमें प्राथमिक आँकड़ों के प्रयोग से विश्वसनीयता में वृद्धि हुई तथा शोध की गुणवत्ता में उन्नति हुई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) इससे भूगोल में वर्णनात्मक की जगह वैज्ञानिकता का समावेश हुआ जिससे अनेक कठिन समस्याओं का विश्लेषण तार्किक रूप से किया जाने लगा

(iii) अनुभाविक विधियों के स्थान पर मात्रात्मक विधियों के प्रयोग से परिणामों की सटीकता में वृद्धि हुई

(iv) संसाधनों की अवस्थिति तथा उद्योगों की अनुकूलतम अवस्थिति ज्ञात करना आसान हुआ

(v) उत्पादन प्रक्रिया तीव्र एवं आसान हो गई

(vi) भूगोल एक प्रतिष्ठित रूप से पुनः स्थापित हुआ

वर्तमान काल में मात्रात्मक क्रान्ति का महत्व निम्न रूप में है-

(क) संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग हेतु उद्योगों व बाजार की स्थिति ज्ञात करना जैसे लौह इस्पात उद्योग अवस्थिति में वेबर के सिद्धान्त का प्रयोग

(ख) 'GIS, GPS' इत्यादि के इस्तेमाल से मानचित्रण प्रक्रिया आसान हुई है तथा गुणवत्ता में वृद्धि होती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) जनसंख्या व विकास के विशाल आंकड़ों का गणितीय सांख्यिकीय विधि से आसानी से विश्लेषण किया जा सकता है।

(घ) शहरी नियोजन व आपदा प्रबन्धन के पूर्वानुमान में सहायता

परन्तु कुछ कमियाँ भी हैं-

(क) भूगोल में मानवीय व्यवहार की उपेक्षा

(ख) अतिउत्पादन की समस्या से संसाधनों का अंधाधुंध दोहन → पर्यावरणीय समस्या

(ग) पूंजीवाद के कारण गरीब व अमीर के मध्य अन्तराल में वृद्धि

(घ) भूगोल की आत्मा पर चोट

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर मात्रात्मक क्रान्ति के कारण भूगोल में अनेक लाभ प्राप्त हुए वहीं दूसरी ओर मानवीय व्यवहार व चेतना की अनदेखी के कारण भूगोल की अंतर्आत्मा को नुकसान हुआ है। इसी कारण व्यवहारवाद, मानववाद इत्यादि उपागमों का विकास किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 'भूगोल में मानववाद के विकास रूपी महल का निर्माण प्रत्यक्षवाद व मात्रात्मक क्रांति के आलोचनात्मक आधार पर हुआ।' चर्चा कीजिये। 15

'The humanism in geography developed on pragmatism and quantitative revolution.' Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रत्यक्षवाद व मात्रात्मक क्रान्ति में गणितीय विश्लेषणों, प्रमेयों, अवस्थिति विश्लेषण, मॉडलों का व्यापक प्रयोग किया गया जिसमें निम्न कमियाँ विद्यमान थी.

(i) मानव के व्यवहार व भूमिका की उपेक्षा

(ii) मानव को केवल आर्थिक मानव माना गया तथा उसकी चेतना व चिन्तन को कोई स्थान नहीं दिया गया

(iii) नैतिकता, सांस्कृतिक मूल्यों की अनदेखी की गई

(iv) मानव - पर्यावरण संबन्धों की कृत्रिम व्याख्या करने का प्रयास किया

इन्हीं सभी कमियों के कारण तथा भूगोल में मानव के महत्त्व को बढ़ाने एवं उसकी सोच, ज्ञान, चिन्तन इत्यादि की महत्ता को स्थापित करने के लिए मानववाद का विकास हुआ।

"मानववाद के अन्तर्गत मानव के ज्ञान, चिन्तन व चेतना का अध्ययन किया जाता है।" - हर्टशोर्न

सर्वप्रथम 1951 में किर्क महोदय ने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानववादी भूगोल के संबंध में अपने विचार व्यक्त किया।

इसके बाद यी फू तुआन ने 1970 के दशक में मानववादी भूगोल के विकास को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया तथा अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

तुआन महोदय ने बताया कि मात्रात्मक क्रान्ति के दौरान मानव के महत्व की उपेक्षा की गई थी अतः मानव के विचारों, चिंतन व ज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।

उन्होंने इसकी प्रेरणा निम्न स्रोतों से प्राप्त की
(क) फ्रांस के संभववादी विचारकों के विचारों से
(ख) किर्क महोदय के व्यवहारवादी भूगोल से

यीफू तुआन ने मानववाद के अन्तर्गत बताया कि मानव को पर्यावरण प्रभावित करता है तथा मानव भी अपने व्यवहार से पर्यावरण को काफी प्रभावित करता है।

इन्होंने मात्रात्मक क्रान्ति व प्रत्यक्षवाद की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कमियों को उजागर किया तथा भूदृश्यों के निर्माण व विकास में मानव के व्यवहार का अध्ययन किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है प्रत्यक्षवाद एवं मात्रात्मक क्रान्ति में अनेक कमियाँ थी जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप मानववाद, व्यवहारवाद, कल्याणवाद तथा उग्रसुधारवाद इत्यादि का विकास हुआ।

मानववादी भूगोल वेत्ता 'भूगोल को मानव के घर के अध्ययन के रूप में देखते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(c) 'भूगोल में उपयोगिता-अभिगम (Pragmatism access) एक नियोजित क्रिया है न कि केवल नियोजन के लिये सोच।' सविस्तार समझाइये। 15

'Pragmatism access is a planned function and not just a thought for planning.' Explain. 15

उपयोगिता अभिगम में प्रत्यक्षवाद पर बल दिया जाता है।

विशेषताएं -

(i) गणितीय विश्लेषण का प्रयोग

(ii) मॉडलो का प्रयोग

(iii) गणितीय सांख्यिकी के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण

(iv) अनुभव के स्थान पर मात्रात्मक विधियों का उपयोग

उपयोगितावाद में एक निश्चित प्रक्रिया का पालन किया जाता है जो इसकी विशिष्टता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) मानव विकास सूचकांक के मूल्यांकन के आधारों की चर्चा कीजिये।

Discuss the bases of estimation of Human Development Index.

मानव विकास सूचकांक का विकास 'महबूब उल हक' द्वारा 1980 के दशक में किया गया था जिसका प्रयोग 'UNDP' द्वारा प्रतिवर्ष अपनी '<u>मानव विकास रिपोर्ट</u>' में मानव विकास की स्थिति व प्रगति को मापने में किया जाता है।

मानव विकास सूचकांक तीन आधारों पर प्राप्त किया जाता है -

(i) <u>प्रति व्यक्ति आय</u> - यह देश की राष्ट्रीय आय व जनसंख्या का अनुपात है। इससे देश में जीवन स्तर (standard of living) के बारे में पता लगता है।

(ii) <u>जीवन ~~प्रत्याशा~~ प्रत्याशा</u> - जन्म के समय व्यक्ति के जीवन की लम्बाई/अवधि जीवन प्रत्याशा कहलाती है। ~~इससे~~ इससे देश के स्वास्थ्य परिदृश्य का पता लगता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) शिक्षा का स्तर- इसमें विद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों, 'ड्रापआउट' की संख्या इत्यादि के आधार पर सूचकांक की गणना होती है। इससे देश की शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन होता है।

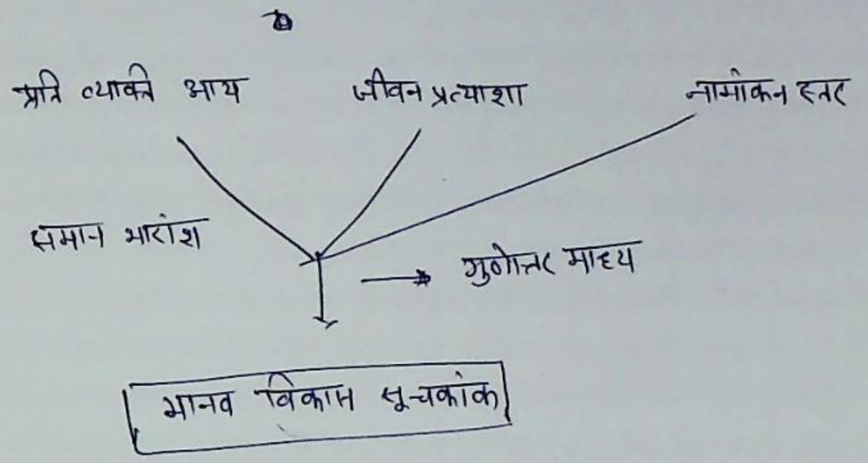

इस प्रकार मानव विकास सूचकांक में जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य को शामिल किया जाता है तथा मानव विकास का स्तर जाना जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

(c) पृथ्वी की उत्पत्ति से संबंधित 'चैम्बरलिन की ग्रहाणु परिकल्पना' पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on 'Chamberlain's planetsimal hypothesis'.

चैम्बरलिन ने पृथ्वी की उत्पत्ति के संबंध में ग्रहाणु परिकल्पना में पृथ्वी की उत्पत्ति को अनेक ग्रहाणुओं से मिलकर होना बताया।

सिद्धांत की प्रमुख बातें

(i) प्रारंभिक काल में छोटे-छोटे ग्रहाणु विद्यमान थे जो अत्यन्त गर्म व उच्च घनत्व वाले थे।

(ii) गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव के कारण ये ग्रहाणु आपस में आकर्षित होकर पास आने लगे

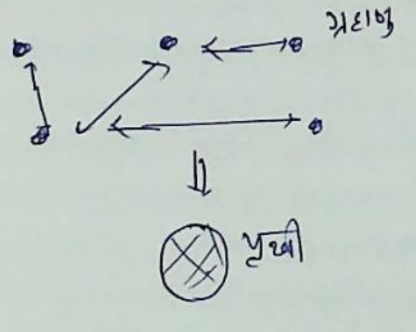

(iii) बाद में पास आने से इन ग्रहाणुओं का संलयन हुआ तथा पृथ्वी का निर्माण हुआ

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) कालान्तर में पृथ्वी धीरे-धीरे ठण्डी हुई तथा वायुमण्डल के विकास के कारण वर्तमान स्वरूप में आ गयी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(d) हिस्कैनन के भूसंतुलन सिद्धांत पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on Heiskanen's theory of isostasy.

पृथ्वी पर स्थित ऊँचे स्थलों जैसे पर्वत, पठार तथा नीचे स्थानों जैसे सागर, घाटी इत्यादि के मध्य पाया जाने वाला संतुलन ही भूसंतुलन कहा जाता है।

सर्वप्रथम डटन (1889) ने इस संबन्ध में अपने विचार व्यक्त किया।

बाद में हीस्कैनन ने प्राट व एयरी के मतों का संयोजन करके अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया

सिद्धान्त की मुख्य बाते-

(i) एक ही स्तंभ का घनत्व बदलता रहता है ऊपर कम घनत्व जबकि नीचे ज्यादा पाया जाता है

(ii) ~~अ ब~~ एक स्तम्भ से दूसरे स्तंभ में भी घनत्व बदलता रहता है।

(iii) जो स्तंभ जितना ज्यादा ऊचा होता है उसका घनत्व उतना ही कम होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इसी के साथ यदि भूसंतुलन में अव्यवस्था होती है तो पृथ्वी के अन्दर मैग्मा प्रवाह होता है तथा भूसंचलन की क्रिया द्वारा वापस संतुलन की स्थिति प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

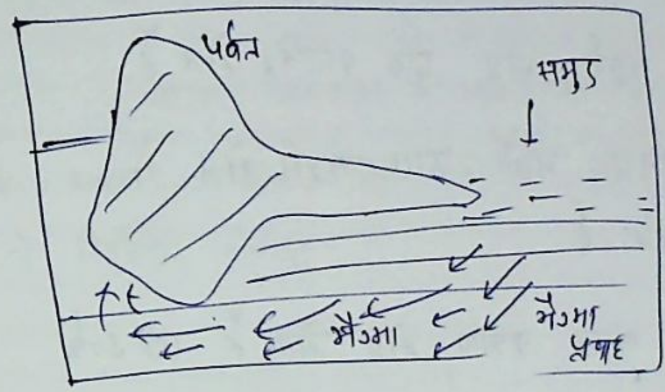

चित्र : वैश्विक भूसंतुलन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) 'केंद्रीय स्थान' एवं 'केंद्रीयता' पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on 'Central Place' and 'Centrality'.

केंद्रीय स्थान - ऐसे स्थान जो कई बस्तियों के मध्य होते है तथा विशिष्ट प्रकार की सेवाएं देते है

→ ये मुख्यतः द्वितीयक व तृतीयक सेवाएं देते है

→ इनका प्रभाव संपूर्ण क्षेत्र पर होता है

→ ये भी संपूर्ण क्षेत्र द्वारा प्रभावित होते है

→ ये यातायात मार्गों द्वारा संपूर्ण क्षेत्र से जुड़े होते है

→ इनका कुछ प्रभाव क्षेत्र होता है जो इनके कार्यों के प्रकार व उनकी केन्द्रीयता पर निर्भर करता है

केन्द्रीयता - केन्द्रीय क्षेत्र के प्रभाव क्षेत्र की तीव्रता (Intensity) ही केन्द्रीयता कहलाती है

केन्द्रीयता के मापक.

(i) जनसंख्या

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) टेलीफोन की संख्या

(iii) खुदरा व्यापार का प्रभाव

(iv) परिवहन मार्गों का प्रभाव

जो स्थान जितना ज्यादा बड़ा होगा उसका प्रभाव भी उतना ज्यादा होगा।

वाल्टर क्रिस्टालर ने 1933 में इस संबन्ध में अपना सिद्धान्त दिया जिसको बाद में लॉश ने संशोधन किया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (a) स्थलाकृतिक विकास से संबंधित डेविस और पैंक के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करें। 15

Give a comparative account of the ideas of Davis and Penck on landform development. 15

स्थलाकृतियाँ अंतर्जात एवं बहिर्जात शक्तियों के प्रभाव के कारण निरन्तर परिवर्तनशील रहती हैं। इसलिए विद्वानों ने स्थलाकृतिक विकास को समझने के लिए अनेक सिद्धांतों एवं मॉडलों का प्रतिपादन किया है जिसमें हट्टन, डेविस, पेंक, किंग, वुड इत्यादि के विचार प्रमुख हैं

'W.M. डेविस' ने 1889 में अपना 'भूआकृतिक चक्र' संबंधी मॉडल प्रस्तुत किया तथा 'नदी अपरदन चक्र' को सामान्य अपरदन चक्र की ~~संज्ञा~~ संज्ञा दी वहीं पेंक ने डेविस की आलोचना करते हुए जर्मन भाषा में अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया।

डेविस एवं पैंक के विचारों में अंतर

डेविस	पेंक
(i) प्रारंभिक स्थलाकृति को समतल भूमि माना	(i) 'प्राइमरम्फ' को प्रारंभिक भूमि माना
(ii) पर्वत उत्थान को तीव्र प्रक्रिया बताया	(ii) मंद व लम्बे समय तक चलने वाली बताया
(iii) अपरदन उत्थान के बाद प्रारंभ होता है	(iii) दोनों साथ-साथ चलते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) भूआकृतियों को संरचना, प्रक्रम व अवस्था का प्रतिफल बताया	(v) भूआकृतियों को अंतर्जात व बहिर्जात शक्तियों की आनुपातिक कार्यदर का प्रतिफल बताया
(vi) आद्रिम स्थलाकृति पेनीप्लेन को बताया	(vi) इन्द्रम्फ जिसमें 'मोनोडनाक' पाये जाते हैं
(vii) समय व अवस्था का प्रयोग	(vii) समय निरपेक्ष मॉडल व चरण शब्द का प्रयोग
(vii) ~~[illegible]~~ बहिर्जात शक्तियों पर ज्यादा बल दिया क्योंकि डेविस भौतिक भूगोल वेत्ता था	(vii) भूविज्ञानी (Geologist) था अतः अन्तर्जात शक्तियों पर ज्यादा बल दिया
(viii) आर्द्र जलवायु का मॉडल	(viii) आर्द्र व शुष्क जलवायु का मॉडल

इस प्रकार स्पष्ट है कि डेविस व पेंक के विचारों में काफी अन्तर थे क्योंकि पेंक डेविस का एक कटु आलोचक था तथा समय को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूआकृतिक विकास में महत्वपूर्ण नहीं मानता था। परन्तु इसी के साथ उनके मॉडलों में कुछ समानताएं भी है जो निम्न है-

(क) नदी को अपरदन चक्र में महत्वपूर्ण स्थान देना
(ख) भूआकृतिक विकास को क्रमिक माना अर्थात् चरणों में माना
(ग) आधार तल के सिद्धांत को मान्यता दी
(घ) घाटी के आकार (shape) व स्थलाकृतियों में समानता जैसे 'V' आकार घाटी व 'U' आकार की घाटी का दोनों ने उल्लेख किया।

इस प्रकार डेविस व पेंक के मॉडलों में अनेक समानताएं व असमानताएं हैं परन्तु भूगोल में दोनों का ही महत्वपूर्ण स्थान है।

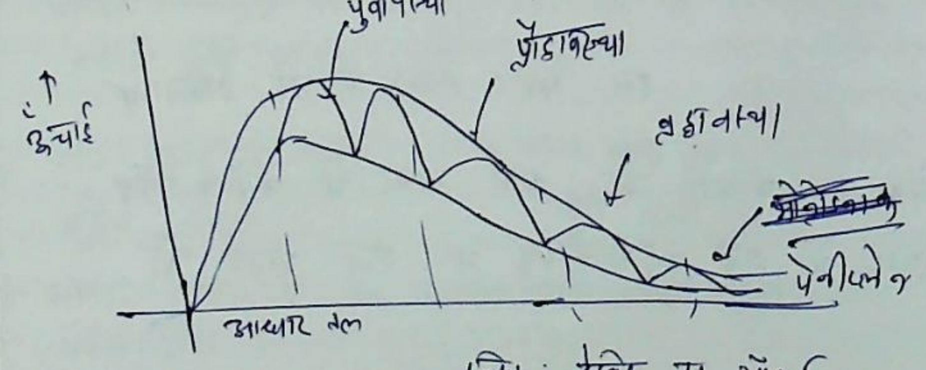

चित्र : डेविस का मॉडल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) वायुमंडल के त्रिकोशिकीय रेखांशिक परिसंचरण की क्रियाविधि को तथा विश्व की जलवायु में उसके महत्त्व को स्पष्ट करें। 20

Discuss the mechanism of tri-cellular longitudinal circulation in atmosphere and its significance for the global climate. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पृथ्वी पर सभी जगह एक समान ताप एवं दाब नहीं पाया जाता है अतः इनमें अन्तर के कारण विभिन्न परिसंचरणों का विकास होता है जिससे पृथ्वी पर ऊष्मा संतुलन कायम रहता है

इसी संदर्भ में वायुमण्डलीय त्रिकोशिकीय परिसंचरण का अत्यंत महत्त्व है जिसमें तीन कोशिकाओं
• हेडली, फेरल व ध्रुवीय कोशिकाओं के द्वारा वायु परिसंचरण होता है

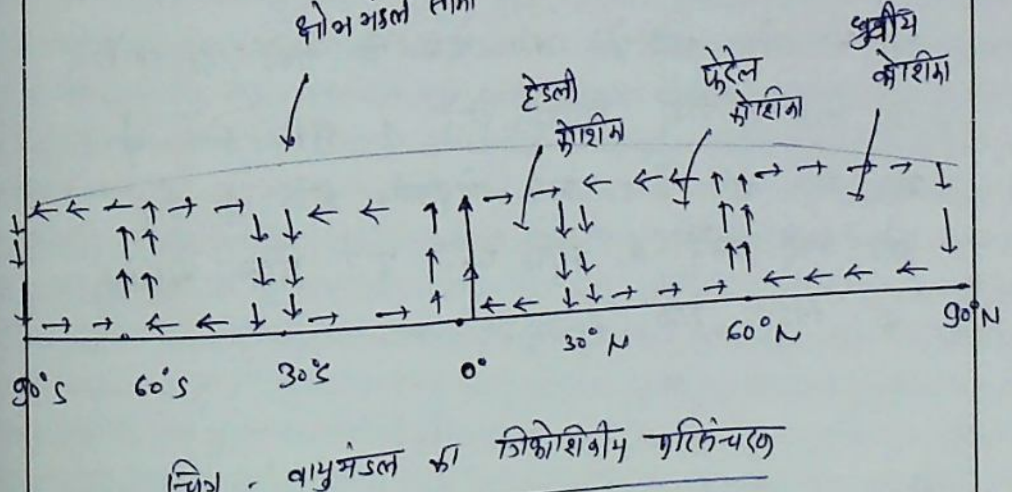

चित्र - वायुमंडल का त्रिकोशिकीय परिसंचरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) हेडली कोशिका. विषुवतीय क्षेत्रों में निम्न दाब पेटी से वायु का ऊपर की ओर संवहन होता है तथा ऊपर जाकर वह दो भागों में बँटकर ध्रुवों की ओर गति करती है परन्तु पृथ्वी के कोणीय संवेग व गुरुत्वाकर्षण के कारण ये पवनें 30°-35° अक्षांशों पर नीचे की ओर उतरती है जहाँ उच्च दाब पेटी का निर्माण होता है। वहाँ से फिर ये पुनः विषुवतीय क्षेत्रों की ओर गमन करती है। इस प्रकार एक पूरा चक्र पूरा होता है। हेडली महोदय ने इसकी खोज की थी

(ख) फेरेल कोशिका: उपोष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटी तथा ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटी से पवनों का उपध्रुवीय क्षेत्रों में (60°-65° अक्षांश) पर अभिसरण होता है तथा पवनें ऊपर की ओर उठती है। वहाँ ऊपर से पवनें दो भागों में विभाजित होकर विषुवतीय क्षेत्रों व ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर गमन करती है। इससे विषुवतीय क्षेत्रों की ओर जाने वाली पवनों व पछुआ पवनों द्वारा फेरेल कोशिका का निर्माण होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्रुवीय कोशिका - ध्रुवों पर वायु भारी होकर अवतलित होती है जिससे एक चक्र बन जाता है। जिससे ध्रुवीय कोशिका का विकास होता है।

परिसंचरण का विश्व जलवायु पर प्रभाव:

(i) इससे ऊष्मा आधिक्य वाले क्षेत्रों से ऊष्मा को ऊष्मा कमी वाले क्षेत्रों में पहुंचाया जाता है जिससे पृथ्वी का ऊष्मा संतुलन कायम रहता है।

(ii) वर्षा के वितरण में प्रभावी भूमिका

(iii) मरुस्थलों के वितरण में भूमिका

(iv) परिवहन, व्यापार व वाणिज्य पर प्रभाव

(v) मानसून की क्रियाविधि, जेटधारा तथा चक्रवातों के निर्माण में भूमिका

अतः त्रिकोशिकीय परिसंचरण संपूर्ण ग्लोब पर पवनों के परिसंचरण में भूमिका निभाकर वैश्विक जलवायु व जनजीवन को काफी प्रभावित करता है।

दृष्टि The Vision
Copyright - Drishti The Vision Foundation

(c) महासागरीय निक्षेपों का वर्गीकरण प्रस्तुत करते हुए गंभीर महासागरीय निक्षेप का विस्तृत विवरण दीजिये। 15

Give an account of various oceanic deposits and explain the pelagic deposits. 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महासागरों में पाए जाने वाले असंगठित अवसादों को महासागरीय निक्षेप कहा जाता है जिसमें चट्टानों के टुकड़े, जीव-जन्तुओं व वनस्पतियों के अवशेष इत्यादि शामिल होते हैं।

महासागरीय निक्षेपों को अनेक आधार पर वर्गीकृत किया जाता है-

(क) पदार्थों की प्रकृति के आधार पर-

(i) भूमिज निक्षेप

(ii) सागरीय निक्षेप
- जैविक निक्षेप
  - चूना प्रधान
    - टेरापोड
    - ग्लोबिजेरेना
  - सिलिका प्रधान
    - रेडियोलेरियन
    - डायटम
- ज्वालामुखी निक्षेप

(iii) उल्का पिण्ड

(ख) गहराई के आधार पर

(i) तटतलवासी (नैरेटिक) - जो कम गहराई पर मिलते हैं।

(ii) गंभीर महासागरीय निक्षेप (पैलेजिक) - जो गहराई पर मिलते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

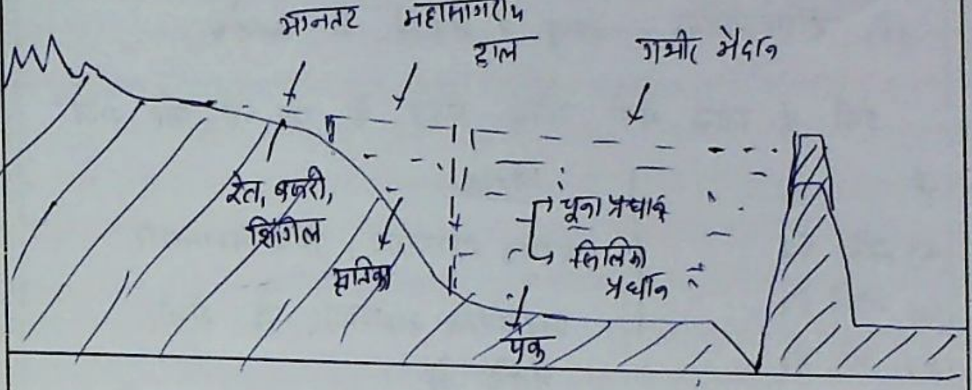

चित्र: महासागरीय निक्षेपों की अवस्थिति

<u>गम्भीर महासागरीय निक्षेप</u> - ऐसे निक्षेप महासागर में 2000m से 6000 m की गहराई पर प्राप्त होते हैं। इसमें गहराई में रहने वाले जन्तुओं के अस्थिपंजरों के अवशेष प्राप्त होते हैं साथ ही कई प्रकार के <u>ऊज (oozes)</u> भी प्राप्त होते हैं जिनमें प्रमुख हैं।

(क) <u>चूना प्रधान ऊज</u> - चूने की ज्यादा मात्रा, दो उपप्रकार
- (i) टेरापोड - टेरापोड नामक <u>मोलस्क</u> के अस्थिपंजरों से
- (ii) ग्लोबिजेरिना - ग्लोबिजेरिना के अवशेष, 60-70% चूना

(ख) <u>सिलिका प्रधान ऊज</u> - सिलिका की ज्यादा मात्रा पायी जाती है व चूने की कम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) डायटम -

(ii) रेडियोलेरियन - जन्तु व शैवालों के अवशेष

इसी के साथ यहाँ अनेक प्रकार के पंक भी पाए जाते हैं.

	वितरण-
(क) लाल पंक	प्रशान्त महासागर, हिन्द महासागर.
(ख) नीली पंक	अटलांटिक महासागर के गंभीर
(ग) हरी पंक।	मैदानों मे

इनके अलावा लाल मृत्तिका व ज्वालामुखी धूल का जमाव भी यहाँ होता है।

इस प्रकार महासागर निक्षेप संपूर्ण महासागर में अनेक गहराई वाले स्थानों पर विस्तृत है जिनका विस्तृत महत्व है।

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

प्रश्न पत्र- द्वितीय

मानव भूगोल में संदर्श और मॉडल, सिद्धांत एवं नियम
(भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान और समुद्र विज्ञान)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में मुद्रित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation